सं. श्रो. वि. श्राई०डी०/एफ डी 2/170-85/40829, —चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. श्रायुव इन्डस्ट्रीज 207/24 फरीदाबाद, के श्रमिक श्री उमा शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक ▶िववाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों को प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबन्धित मामला है:—

क्या श्री उमा शंकर की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 11 अक्तूबर, 1985

सं. ग्रो.वि./जी. जी. एन./51-85/42071.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरब मैनेजर, हरियाणा रोडवेज, रिवाडी के श्रमिक श्री भूर दत्त तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिलतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त था उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने के हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री भूर दत्त की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो०वि०/एफ०डी०/248-85/42086.—चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दुजोद बाला इन्डस्ट्रीज, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री जवाहर झा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणां के राज्यपाल, इस विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हिर्त्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम, 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त तथा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट सीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त भामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री जवाहर झा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./251-85/42100.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) गिरधर सिल्क मिल, प्लाट नं 68, सैक्टर 27 सी, फरीदाबाद के श्रीमक श्री जेठा राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, धौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धार 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के द्वाज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रिक्षसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उपत अधिनियम की खारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन माम में देने हैंतु निर्दिष्ट करते हैं, जोवि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है;

वया श्री जेंटा राम की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि./जी.जी.एन./50-85/42283---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि प्रशासक, नगरपिलका, गृहगावां के श्रमिक श्री राम प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित सामले में कोई ग्रीहोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जन, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495/जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिधिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम प्रसाद की सेवाभ्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? जैं० पी० रतम,

> उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।